तृतीय अध्याय

शैली विज्ञान तथा अन्य शास्त्र

३.१ पृष्ठभूमि

३.२ शैली विज्ञान तथा साहित्यशास्त्र

३.३ शैली विज्ञान तथा भाषा विज्ञान

३.४ शैली विज्ञान तथा सौन्दर्यशास्त्र

३.५ शैली विज्ञान तथा दर्शनशास्त्र

३.६ शैली विज्ञान तथा मनोविज्ञान

३.७ शैली विज्ञान तथा समाजविज्ञान

३.८ शैली विज्ञान तथा मानवविज्ञान

३.९ शैली विज्ञान तथा इतिहास

३.१० शैली विज्ञान तथा भूगोल

३.११ अन्य शास्त्रों में शैली विज्ञान का महत्व

३.१२ शैली विज्ञान की स्वतंत्र सत्ता

तृतीय अध्याय

शैली विज्ञान तथा अन्य शास्त्र

३.१ पृष्ठभूमि :

ज्ञान व्यापक होता है लेकिन मनुष्य ने उसे अपनी सुविधा के लिए विभाजीत किया और अनेक विज्ञानों का निर्माण हुआ । लेकिन व्यवहारिक धरातल पर कुछ शास्त्रों का कुछ भी संबंध नहीं होता जैसे गणित और इतिहास लेकिन फिर भी हर विज्ञान का दुसरे ज्ञान, विज्ञान से कुछ न कुछ संबंध होता ही है ।

इसलिए किसी भी विज्ञान को पूरी तरह से समझना है तो, उसका अन्य शास्त्र से संबंध किस प्रकार का है । किस रूप में वह एक दुसरे से पूरक है यह देखना जरुरी होता है । शैली विज्ञान को ही देखें तो शैली विज्ञान का आधार भाषाविज्ञान और साहित्यशास्त्र को माना जाता है । तथा अन्य शास्त्रों से भी उसका संबंध दिखाई देता है । इन अन्य शास्त्रों से शैलीविज्ञान सहयता लेता है और शैली विज्ञान इन अन्य शास्त्रों का सहायक भी है । शैली विज्ञान भाषाविज्ञान साहित्यशास्त्र के साथ ही लेखक के व्यक्तित्व से जुडा होने से उसका मनोविज्ञान से संबंध है । ''शैली साहित्यकार के अन्तःकरण की अनुभूतियों को अभिव्यक्त करने की एक विशिष्ट पध्दति है । इसके द्वारा लेखक का संपूर्ण व्यक्तित्व कृति में झाँकता हुआ दिखाई देता है ।''[१]

इसी प्रकार अन्य शास्त्रों में सौन्दर्यशास्त्र, दर्शनशास्त्र, समाजविज्ञान, मानवविज्ञान, इतिहास, भूगोल, आदि से भी संबंधीत है इन शास्त्रों से उसके संबंध का अध्ययन करना शैलीविज्ञान का स्वरूप जानने के लिए आवश्यक है ।

३.२ शैली विज्ञान तथा साहित्यशास्त्र :

भारतीय काव्यशास्त्र में भाषा और भाषाशास्त्र (व्याकरण) का महत्व शुरू से रहा है । भारतीय वाङ्मय में भाषाशास्त्र का परीपूर्ण रूप व्याकरण में है । काव्यशास्त्र के मूल आधार है

---

१. क्षिरसागर, डॉ. वसंत : मोहन राकेश का कथात्मक साहित्य, पृ.क्र. २२

व्याकरण और दर्शन इसकारण लगभग सभी आचार्यों ने व्याकरण का महत्व स्वीकार किया है । ''भारतीय साहित्यशास्त्र हमेशा व्याकरण दर्शन से प्रभावित होता रहा है और व्याकरण चिंतन में अगर कोई मोड आया है तो उसका प्रत्यक्ष प्रभाव (काव्य) साहित्यशास्त्र पर भी देखने को मिलता है ।''[१]

भारतीय काव्यशास्त्र का चिंतन और उसकी विश्लेषणात्मक पध्दति इनका शैली विज्ञानिक मान्यताओं से कितना साम्य और वैष्यम्य है यह देखना आवश्यक है ।

शैलीविज्ञान की दृष्टि भाषावादी है । काव्य को वह भाषा संरचना का एक सृजनात्मक रूपान्तरण मानता है । वही भारतीय काव्यशास्त्र में काव्य की आत्मा को लेकर गंभीर विचार हुआ लेकिन उसके शरीर के विषय में शुरू से सब एकमत रहे हैं और सभीने कहा कि काव्य शब्दार्थ रूप है । अनेक प्रमुख आचार्यों ने शब्द और अर्थ में शब्द को प्रमुख माना है । भामह एक स्थान पर कहते है क्योंकि अर्थ सौंदर्य सौशब्द ही काव्य है क्योंकि अर्थ सौंदर्य में ऐसा चमत्कार नहीं होता – तदेतदाहुः सौशब्दां नार्थव्युत्पत्तिरीदृशा '''काव्य भाषिक विधान' है – यह मान्यता भारतीय काव्यशास्त्र में आरंभ से ही बध्दमूल रही है, और उधर यूरोप में भी इसके विषय में कभी द्विविधा नहीं रही । इसलिए सबसे पहले रैन्सम को इस बारे में इलहाम नहीं हुआ कि 'कविता भाषा है ।' रैन्सम से हज़ार वर्ष पूर्व भारतीय आचार्य इतने ही विश्वास के साथ कह चुका था : ननु शब्दार्थों काव्यम् ।''[२]

शैलीविज्ञान में विपथन को शैली के मूलतत्व में से एक माना गया है । वही काव्यशास्त्र में वक्रता का अर्थ है शास्त्र और व्यवहार में प्रयुक्त भाषिक विधान का व्यतिरेक । सबसे प्रथम भामह ने 'लोकाति-क्रांतगोचर' अर्थात लोकमान्य से विचित्र भाषा प्रयोग के रूप में इसका निर्देश किया । इसके उपरान्त दंडी, आनंदवर्धन, अभिनव गुप्त, कुंतक, भोज आदि ने इसका महत्व प्रतिपादीत किया ---- काव्याशास्त्र मे शुरू से ही मानक भाषा से विपथन को काव्यशैली का मूलतत्व माना गया है । ''संस्कृत में वकृता का एक अर्थ विपथन भी है, इसीलिए डॉ. राघवन ने आज से ४०-४५ वर्ष पूर्व वक्रोक्ति के लिए 'डेविएटिंग एक्सप्रेशनः विपथनशील कथन भंगिमा शब्दावली का प्रयोग किया था ।''[३]

---

१. चौहान, डॉ. जसपाली : चित्रलेखा का शैली वैज्ञानिक अध्ययन, पृ.क्र. ५३
२. डॉ. नगेन्द्र, शैली विज्ञान : पृ.क्र. ५९
३. वही, पृ.क्र. ६०

उपचार में अर्थ संक्रमण होता है । जिससे शब्दार्थ प्रयोग में चमत्कार उत्पन्न होता है विमसाट ने इसे काव्य का मूल गुण माना तो विल्सन नाईट ने शेक्सपियर के पूरे नाटकों को 'लक्षण का विस्तार' माना है । भारतीय काव्यशास्त्र में लक्षणा का महत्व शुरू से आनंदवर्धन कहते है कि, भक्तिवादियों जो लक्षणा को काव्य का प्राणतत्व मानते थे उनकी एक प्राचीन परंपरा है । भोज ने इसे वक्रता का आधार माना है ।

अमरीकी लेखक लुई मिलिक ने शैली निर्माण में चयन अनिवार्य माना है । कहीं लेखक सावधान होकर कलात्मक विवेक से शब्द, वाक्य, वाक्याशों में से संदर्भ और कलात्मक प्रभाव के अनुरूप किसी एक का निर्वाचन करता है । तो कहीं अभ्यास होने से अविचारित रूप में इस प्रकार का चयन करता है । संस्कृत काव्यशास्त्र में इसका विचार से विवेचन है –

आवापोध्दरणे तावद्यावद्दोलायते मनः । पदानांस्थापिते स्थौर्य हन्त सिध्दा सरस्वती ।।

कविता में संदर्भ के अनुकूल पदों को रखने और हटाने में जब तक चित्त चंचल रहता है, तभी एक कवि की अपरिपक्वावस्था समझनी चाहिए । जब पद–चयन में स्थिरता प्राप्त हो जाये तब समझना चाहिए कि अब सरस्वती सिध्द हो गयी ।

भारतीय काव्यशास्त्र और आधुनिक शैली विज्ञान में बहुचर्चित शब्द विन्यास का गुण, रीति, वृति तथा अनेक अलंकारों के विवेचन के अंतर्गत यथोचित महत्व प्रदान किया गया है । वामन तथा राजशेखर आदि ने उसके लिए 'पाक' शब्द का प्रयोग किया है । रसोचितशब्द्रार्थसूक्ति निबंधन : पाक :

भारतीय और पाश्चात्य भाषाशास्त्र में सामान्यतः भाषा के तीन तत्व माने गये हैं । वर्ण, पद और वाक्या इसके अतिरिक्त प्रबंध जिसे भारतीय साहित्य में महाकाव्य और पाश्चात्य साहित्य में डिस्कोर्स कहा है । साहित्यिक शैली के भाषिक तत्व यही है और आधुनिक शैली विज्ञान की नीव भी इसीपर है जिस पर वह निर्मित हुआ है ।

इस प्रकार शैलीविज्ञान के मूल तत्व जो माने गये है उन सभीपर भारतीय साहित्यशास्त्र में बहुत पहले ही चिंतन और विचार विनिमय हुआ है । और उन्हें काव्य के लिए आवश्यक मानकर स्वीकारा भी गया है । भारतीय साहित्यशास्त्र की चिन्तन वृति वस्तुवादी तो दृष्टी भाषावादी है और इसी

भाषावादी दृष्टि को लेकर शैलीविज्ञान साहित्य की शैली का अध्ययन करता है । इस तरह साहित्यशास्त्र और शैलीविज्ञान दोनों का संबंध है । क्योंकि साहित्य भाषा का स्थायी रूप है इसलिए भाषाशैली का अध्ययन करनेवाले शैलीविज्ञान का आधार साहित्य है ।

साहित्य के सभी पक्षों, अंगो रूपों का विवेचन साहित्यशास्त्र कर सकता है लेकिन शैली विज्ञान साहित्य के भाषिक विधान तक ही सीमित है । क्योंकि भाषा से परे जीवन का अवगाहन भाषिक विश्लेषण मात्र से संभव नहीं है । साहित्यशास्त्र का प्रायोगिक रूप है साहित्य समीक्षा तो शैली विज्ञान का शैलीविवेचन इन दोनों का अतः संबंध वही है जो साहित्यशास्त्र और शैलीविज्ञान का है अर्थात् शैलीतात्विक अध्ययन साहित्य समीक्षा का एक अंग है । क्योंकि साहित्य समीक्षा के सामान्यत: तीन स्तर है १) प्रभाव ग्रहण, २) व्याख्यान विश्लेषण, ३) मूल्यांकन इनमे से दूसरे स्तर अर्थात व्याख्यान विश्लेषण तक ही शैली विज्ञान की परिधी सीमित है । और व्याख्यान विश्लेषण में भी केवल भाषिक विश्लेषण तक और यह भाषिक विश्लेषण साहित्य के मर्मबोध में योगदान करता है, तब तक ही साहित्य समीक्षा के अंतर्गत रहता है । लेकिन स्वतंत्र होने पर वह भाषा विज्ञान के अध्ययन का अंग बन जाता है ।

शैली विज्ञान का संबंध आंतरीक मूल्यों से नहीं होता वह उसके लिए अप्रासंगिक है क्योंकि सपोर्ता के शब्दों में शैली विज्ञान को कलात्मक प्रयोजन जैसा प्रत्यय ही उपलब्ध नहीं है । शैली तात्विक अध्ययन की सार्थकता इसी में है कि वह भाषा वैज्ञानिक प्रविधि प्रक्रिया से साहित्य के ऐसे गुणों की खोज करता है जिनकी खोज परंपरागत साहित्य समीक्षा में संभव नहीं थी ।

३.३ शैली विज्ञान और भाषाविज्ञान :

भाषाविज्ञान भाषा की व्यवस्था का वर्णन कथा है, तो शैली विज्ञान भाषा वैविध्य का अध्ययन करता है । ''वैविध्य ही शैली कहा जा सकता है, वही भिन्न-भिन्न वक्ताओं और रचनाकारों को पृथक से पहचानने में सहायक भी होता है ।''[१] शैली विज्ञान एक प्रायोगिक भाषाविज्ञान है क्योंकि शैलीविज्ञान के विभिन्न पक्ष भाषाविज्ञान के विभिन्न शाखाओं ध्वनीय, शब्दीय, रूपीय, वाक्यीय

---

१. शर्मा, डॉ. कृष्णकुमार : शैली वैज्ञानिक अलोचना के प्रतिदर्श, पृ. १४

आदि से संबंधीत है । वह एक काव्यभाषा विज्ञान भी है क्योंकि जहाँ भाषाविज्ञान सामान्य भाषा तक सीमित है वहाँ शैलीविज्ञान काव्यभाषा का अध्ययन करता है । वह भाषा के प्रभाव पक्ष का भी अध्ययन करता है । ''भाषिक विश्लेषण के साथ-साथ उसके प्रभाव पक्ष की भी वह व्याख्या करता चलता है तथा कथ्य की बारीकियों से भाषिक संरचना के ध्वनीय, शब्दीय, रूपीय, वाक्यीय और आर्थीय पक्षों को जोडता है ।''[१] भले ही शैली विज्ञान भाषा विज्ञान पर निर्भर है लेकिन फिर भी भाषाविज्ञान को सामान्य भाषा के ऐसे प्रयोगों को विश्लेषण करने में जो मूलतः काव्यभाषा से आकर सामान्य भाषा में रूढ हो गए है उनके लिए शैलीविज्ञान की सहायता लेनी पडती है ।

शैलीविज्ञान साहित्य रचना का विवेचन करता है इसलिए वह भाषाविज्ञान की प्रविधि प्रक्रिया ग्रहण करता है । साहित्यशास्त्र और भाषाविज्ञान से शैलीविज्ञान का क्षेत्र सीमित है । इन दोनों के संयोग से ही शैली विज्ञान का जन्म हुआ है । सौस्यूर के अनुसार जनव्यवहार और शास्त्रद्वारा परिनिष्ठित सार्वजनिक भाषा भाषाविज्ञान का विषय है । इसके आगे चार्ल्सबेली कहते है भाषा का सैध्दांतिक रूप भाषाविज्ञान का और जीवंत व्यक्ति सापेक्ष व्यवहारिक रूप शैली विज्ञान का विषय है । इस ओर सीमित करते हुए कहा गया की भाषा का व्यक्ति निष्ठ प्रयोगिक सौंदर्य रूप का अध्ययन ही शैली विज्ञान का क्षेत्र है । ''भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण में संकलन की प्रवृत्ति रहती है; उसके अंतर्गत, अत्यंत अवधानपूर्वक लेखक की शब्दावली, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रियापद, क्रिया विशेषण, वाक्यांश आदि की निश्चित योजना के अनुसार विस्तृत तालिकाएं तैयार की जाती हैं और विशेष प्रयोगों की आवृत्तियों, साम्य वैषम्य, संतुलन समानांतर विन्यास क्रम आदि का सांख्यिकीय अध्ययन प्रस्तुत किया जाता है । शुध्द (साहित्यिक) शैली विज्ञान की परिधि में यह सब नहीं आता । उसमें अनिवार्यतः चयन की प्रवृत्ति रहती है और वह केवल ऐसे विशेष प्रयोगों का ही विश्लेषण-संश्लेषण करता है जिनमें कलात्मक वक्रता होती है, अर्थव्यक्ति से आगे सौंदर्य का सृजन जिनका उद्देश्य होता है । भाषाविज्ञान- विशेषकर प्रायोगिक भाषाविज्ञान द्वारा प्रस्तुत विश्लेषण जहां परिणामपरक होता है वहां शैली वैज्ञानिक विश्लेषण गुणात्मक होता है ।''[२]

---

१. तिवारी, भोलानाथ : शैली विज्ञान, पृ.क्र. २८

२. डॉ. नगेन्द्र, शैली विज्ञान : पृ. क्र. ३९

दूसरी दृष्टि से देखे तो शैलीविज्ञान का सामर्थ्य सामने आता है कि, ''भाषा सृजनात्मक होती है और शैली विज्ञान भाषा के सृजनात्मक शक्ति पर बल देता हैं ।''[१] उसक वैज्ञानिक अध्ययन करता है । जो केवल भाषा विज्ञान से संभव नहीं है । भाषाविज्ञान के आधार पर केवल व्याकरणिक रूपों और तत्वों का विश्लेषण हो सकता है । साहित्य के गुण तथा मूल्यों की जानकारी नहीं मिलती । हर अभिव्यक्ति का बाहय और आंतरीक पक्ष होता है और इसीपर अभिव्यक्ति के तथ्य निर्भर होते है इसकारण भावों की जानकारी होना अत्यन्त आवश्यक है । जो शैलीविज्ञान से संभव है ।

इस तरह शैलीविज्ञान और भाषा विज्ञान परस्पर संबंधीत और निर्भर है ।

३.४ शैलीविज्ञान तथा सौंदर्यशास्त्र :

काव्य एक कला है और कला आनंद की अनुभूति कराती है । सौंदर्य से आनंद की निर्मीत होती है । अर्थात काव्यकला भी सौंदर्य से समन्वित है । इसकारण काव्यकला का सौन्दर्यशास्त्रीय विश्लेषण किया जा सकता है । और इस विश्लेषण का आधार भाषा है क्योंकि काव्य भाषा की कला है । भाषा से ही सौंदर्य की निर्मीती की जाती है । ''अन्य मूर्ति कलाओं में जहाँ चाक्षुष तथा अन्य ज्ञानेन्द्रियों से संबंध्द ज्ञान प्रत्यक्ष होता है, काव्य कला में वैसा नहीं होता । इसमें तो जो कुछ भी है, भाषा के माध्यम से है ।''[२] यह सौंदर्यशास्त्रीय अध्ययन भाषा के बिम्ब, प्रतीक, अलंकार आदि को बधार बनाकर, इनको काव्यकला से निर्मीत ऐन्द्रिय संवेगों का मूल मानकर संपन्न होता है ।

प्रत्येक कला का अपना-अपना एक अलग सौन्दर्य होता है । उनके भीतर के समानतत्वों को लेकर ही दर्शन का निर्माण होता हैं ठीक इसी प्रकार साहित्य में कविता, उपन्यास, नाटक, कहानी, निबंध आदि के अलग-अलग सिध्दान्त है और वे एक दूसरे के सिध्दान्त पर लागु नहीं होते किन्तु उनमें ऐसे समान तत्व होते हैं, जिन्हें साहित्यशास्त्र के अन्तर्गत लाया जा सकता है । ''ये समान तत्व ही कलात्मकता के गुण हैं, जिनका समुच्चाय अमूर्त होता है । यही सौन्दर्य हैं और इसे समझने के लिए कला के ऊपरी स्तरों को भी समझना जरूरी होता है । यह पहचान अमूर्त-मूर्त की दंडात्मक स्थिति में हो सकता हैं । इसमें ऐन्द्रियगत् संवेदना अर्थात अमूर्तरूप को देखा जाता है ।''[३]

---

१. चौहान, डॉ. जसपाली : चित्रलेखा का शैली विज्ञानिक अध्ययन, पृ.क्र. ५८
२. शर्मा, डॉ. कृष्णकुमार : शैली वैज्ञानिक आलोचना के प्रतिदर्श, पृ.क्र. १९
३. चौहान, डॉ. जसपाली : चित्रलेखा का शैली विज्ञानिक अध्ययन, पृ.क्र. ६६

सौंदर्यशास्त्र का क्षेत्र व्यापक है क्योंकि उसमें सभी कलाओं का अध्ययन होता है लेकिन शैली विज्ञान केवल भाषा सौंदर्य का ही अध्ययन करता है । वह भाषिक सौंदर्यशास्त्र का अंग है। सौंदर्यशास्त्र में मूर्त के साथ ही अनुभाविक, प्रतीतिक या संकल्पनात्मक अमूर्त पक्ष भी होता है। सौंदर्य तीन प्रमुख अवधारणाएँ रूपवादी, भाववादी और आत्मवादी इनमें से शैलीविज्ञान का संबंध केवल रूपवादी अवधारणा से है । इसमें भी केवल वस्तुरूप से ही शैली संबंधी है, वही सौंदर्यशास्त्र से वस्तुरूप के साथ ही भावरूप और तत्वरूप का भी सैध्दांतिक चिंतन होता है । वस्तुरूप में भी केवल भाषा से उसका संबंध है । शैली विज्ञान सौंदर्य के केवल भाषिक रूप का वस्तुपरक अध्ययन है जबकी सौंदर्यशास्त्र सौंदर्य के समग्र रूप का शास्त्र है । जिसकी परिधि में उस का दर्शन और विज्ञान अमूर्त और मूर्त चिंतन, दोनों ही आते हैं ।

इस प्रकार साहित्य का विश्लेषण सौन्दर्यशास्त्र और भाषाविज्ञान की समन्वित पीठिका पर ही सही होगा । साहित्य की भाषा सामुग्री सूक्ष्म होती है, क्योंकि उसका शैली परक विशिष्ट प्रयोग साहित्यकार की अनूभूति के अनुरूप होता है और काव्य प्रतिभा के कारण उसमें अतिशय अर्थ रूपान्तरण की प्रक्रिया का अध्ययन शैली विज्ञान द्वारा ही संभव है । ''शैलीविज्ञान ही हमें यह बताता है कि साहित्य भाषा में सामान्य भाषा का कहाँ और कितना अतिक्रमण हुआ है तथा रसास्वादन के लिए इसका प्रयोग किस प्रकार हुआ है । इसके अतिरिक्त रचना हमारे भीतर कहाँ-कहाँ अनुभूति को जगा पाई है, कहाँ पर पराकाष्ठा पर पहुँची है और कहाँ-कहाँ हमारे रसास्वादन पर बाधा आई है ? अतः भाषाई संसाधनों के साहित्यिक प्रयोग को गहनता से शैली विज्ञान ही समझा सकता है ।''[१]

३.५ शैली विज्ञान तथा दर्शनशास्त्र :

शैली लेखक के व्यक्तित्व का प्रतिफलन है तो वह लेखक के जीवन-दर्शन तथा चिंतन-पध्दति से अप्रभावित कैसे रह सकता है? स्थूल रूप से व्यक्तित्व के चार स्तर माने जा सकते हैं : जैविक, रागात्मक, सामाजिक और बौध्दिक । इनके संश्लेषण से ही व्यक्तित्व का निर्माण होता है । अतएव, लेखक के व्यक्तित्व के समग्र रूप की अभिव्यक्ति होने के नाते शैली उसकी चिंतन-पध्दति से भी अनिवार्यतः संबध्द है ।

---

१. चौहान, डॉ. जसपाली : चित्रलेखा का शैली विज्ञानिक अध्ययन, पृ.क्र. ६७,६८

ला व्होर्फ ने अपने ग्रंथ 'लैंग्वेज, थॉट एंड रिएलिटी' में स्पष्ट लिखा है कि मनुष्य के तत्त्वबोध की पध्दति पर उसकी भाषा की संरचना का निश्चित प्रभाव पड़ता है ।[१]

जिस प्रकार भारत में मीमांसकों, नैयानिकों आदि दर्शनिकों ने इसीकारण अपने विषय पर विचार करते समय भाषाविज्ञान एवं विशेषकर व्यक्ति की वृत्ति से सम्बन्धित शास्त्र शैलीविज्ञान पर भी गौर से विचार किया है । जैसे – ''मीमांसा के अन्विताभिधानवाद सिध्दान्त के अनुसार भाषा में वाक्य की ही सत्ता मूल है ।''[२] तथा वाक्य के माध्यम से ही साहित्यकार की एवं उसके साहित्यकृति की शैली का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता हैं । किन्तु ''अभिहितान्वयवाद के अनुसार पद की ही सत्ता है वाक्य उसी का जोडा हुआ रूप है ।''[३] इस प्रकार का मत–मतान्तर दार्शनिकों में दिखाई देता है ।

३.५ शैली विज्ञान तथा मनोविज्ञान :

शैली को व्यक्ति–मन का प्रतिबिंब कहा जाता है । अर्थात शैली विज्ञान और मनोविज्ञान का संबंध वैसा ही निकट का है जैसा शैली और व्यक्ति मन का है । परंतु कल्पना अनुमान आदि जैसे तत्वों के प्रयोग में वृध्दि होने से शैली विज्ञान के वस्तुनिष्ठ स्वरूप को धक्का लगा इस कारण शैली विज्ञान के वैज्ञानिक रूप की रक्षा हेतु उसका मनोविज्ञान से संबंध कम हो गया । फिर भी यह अटूट संबंध है ।

मनुष्य का व्यक्तित्व जिस प्रकार उसके मानसिक तथा कार्मिक व्यवहार में व्यक्त होता है, उसी प्रकार वाचिक या भाषिक व्यवहार में भी । व्यक्तित्व और व्यवहार का अन्योन्याश्रित संबंध है । एक ओर जहां मनुष्य का व्यक्तित्व उसके व्यवहार द्वारा व्यक्त होता है, वहीं दूसरी ओर मनुष्य के व्यवहार से उसके व्यक्तित्व का निर्माण भी होता है । इसी प्रकार, शैलीकार के मानसिक व्यवहार द्वारा उसके भाषिक व्यवहार के अध्ययन में सहायता मिलती है और उधर उसके भाषिक व्यवहार के निरीक्षण–परीक्षण द्वारा उसके व्यक्तित्व का अध्ययन भी एक सीमा तक साध्य हो जाता है ।

---

१. व्होर्फ ला, लैंग्वेज, थॉट एंड रिएलिटी, पृ.क्र. २३
२. तिवारी, भोलानाथ : भाषा विज्ञान, पृ.क्र. ३९
३. वही, पृ.क्र. ३९

क्योंकी व्यक्तित्व की अनुरूप ही शैली होती है व्यक्तित्व और मनोवैज्ञानिक चिन्तन पध्दति इनका घनिष्ठ संबंध होता है । ''सुमित्रानन्दन पन्त की शैली उनके कोमल मन के सर्वथा अनुरूप है । इसीप्रकार निराला की उदात्त, काफी स्थानों पर खुरदरी, किन्तु व्यंजक और महाप्राणयुक्त शैली उनके व्यक्तित्व और मनोविज्ञान से काफी सम्बध्द है ।..... इसी प्रकार जैनेन्द्र की शैली का उलझाव, अज्ञेय शैली की कृत्रिमता तथा प्रेमचन्द की शैली की सरलता भी उनके मनोविज्ञान के अनुरूप है ।''[१] इस प्रकार उपमान-चयन शब्दचयन, वाक्यस्तर पर संरचना-चयन तथा प्रोक्ति-स्तर पर अनतर्वाक्यीय सम्बन्धों का चयन लेखक के मनोविज्ञान से सीधे सम्बन्धित है ।

शैली विज्ञानिकों के अनुसार शैली के मूल में लेखक की चयन प्रवृत्ति होती है । यह चयन वृत्ति सायास और अनासाय दोनों पध्दतियों से कार्य करती हैं कभी अंतःप्रेरणा के दबाव से भाषिक तत्वों का चयन अनायास हो जाता है तो कभी चमत्कार एवं प्रभाव उतपन्न करने के लिए जिन भाषिक प्रयोगों का चयन करता है वह आगे चलकर वह धीरे-धीरे उसकी शैली में अंतर्भुत होते हैं । और लेखक उसका अभ्यासवश प्रयोग करता है । शैलीकार की मनोवृत्ति अनुलोम और विलोम रीतियों से काम करती है । अनुलोम संबंध में मनोवृत्ति के अनुरूप शैली होती है तो विलोम संबंध में व्यक्तित्व के प्रतिरूप होती है अर्थात् शैलीकार के अवचेतन मन की अपूर्ण इच्छाओं, अभावों की पूर्ति वह करती है, ''सारंश यह है कि व्यक्तित्व के साथ शैली का संबंध प्रायः तीन प्रकार का हो सकता है - १) प्रत्यक्ष और सचेष्ट, २) अप्रत्यक्ष और अविचारति, ३) अवचेतन और प्रतिक्रियात्मक इनमें से पहले दो की व्याख्या सामान्य मनोविज्ञान की सहायता से और तीसरे की अवचेतन मनोविज्ञान के द्वारा की जाती है ।''[२]

मनोविज्ञान का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है जो अवचेतन मन के अनुसंधान से वह असीम हो गया है । स्पष्ट है कि, मनोविज्ञान के बहुत बडे अंश से शैली विज्ञान का कोई संबंध नहीं है । उसका संबंध केवल प्रायोगिक मनोविज्ञान से और उसमें भी वह उस अंश से संबंधित है, जो मन की सर्जनात्मक और व्यंजनात्मक प्रवृत्तियों का विवेचन करता है ।

---

१. तिवारी, भोलानाथ : शैली विज्ञान, पृ.क्र. २८
२. डॉ. नगेन्द्र, शैली विज्ञान : पृ. क्र. ४१

फीर भी ऐसा होते हुए भी शैली विज्ञान और मनोविज्ञान के संबंध का महत्व इस दृष्टि से है कि, मनोविज्ञान किसी की शैली से उसके मन के बारे में बहुत कुछ बता सकने की सामग्री पा सकता है । तो शैली विज्ञान मनोविज्ञान के आधार पर किसी की शैली के बारे में बहुत कुछ अनुमान लगा सकता है । अर्थात् शैली के लिए मनोविज्ञान का अधार जरूरी है इस संबंध में डॉ. अंबादासजी देशमुख कहते हैं, ''शैली विज्ञान भाषा विज्ञान की यह नविन पर महत्वपूर्ण शाखा है । इस में अध्ययन किया जाता है की किसी भाषा के लेखक या कवि आदि भाषा के किन शब्दों को मुख्य रूप से अपनाते है, उनकी शैली की क्या विशेषता हैं ? इस विज्ञान के द्वारा लेखक कवि और वक्ता का मनोवैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत किया जाता है ।''[१]

३.६ शैली विज्ञान तथा समाजविज्ञान :

भाषा यह समाज जीवन की अभिव्यक्ति को माध्यम उसका अनिवार्य साधन है और साहित्य उसका दर्पण है । अर्थात शैली विज्ञान जो साहित्य और उसकी भाषा का अध्ययन करता है वह दोनो संबंधित होकर इनही समाज से जुडा हुआ है, समाज साहित्य को कथ्य और अभिव्यक्ति दोनों स्तरों पर प्रभावित करता है । समाजवादी दर्शन से समाजशास्त्र का महत्व बढकर अन्य विषयों या शास्त्रों में उसका प्रवेश हुआ । जिससे मनोविज्ञान क्षेत्र में समाजिक मनोविज्ञान और भाषाविज्ञान के क्षेत्र में सामाजिक भाषाविज्ञान का जन्म हुआ, इस तरह सामाजिक भाषाविज्ञान से समाजशास्त्र का संबंध शैलीविज्ञान से जुड गया । ''शैली में जिस हद तक शैलीकार के सामाजकि व्यक्तित्व अर्थात देशकाल से निर्मित व्यक्तित्व का प्रतिफलन रहता है, उसी हद तक शैली विज्ञान पर भी समाजशास्त्र का प्रभाव स्वीकार किया जा सकता है ।''[२]

वैयक्तिक शैली से आगे जाकर शैली वैज्ञानिकों ने वर्गीय, युगीन और राष्ट्रीय शैली यादि का जो अध्ययन प्रस्तुत किया उसका आधार स्पष्टतः समाजशास्त्र ही है । ''व्यक्तिशैली से अलग विशिष्ट काल तथा विशिष्ट वर्ग की भी अपनी शैली होती प्रसाद, पन्त, निराला की शैली एक सीमा तक

---

१. देशमुख, डॉ. अंबादास : भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा, पृ.क्र. १३
२. डॉ. नगेन्द्र, शैली विज्ञान : पृ. क्र. ४३

अलग-अलग है, किनतु उनके काफी शैलीय तत्व समाज भी है । और इसी आधार पर छायावादी शैली की चर्चा की जाती है । ऐसे ही प्रगतिवादी, रीतिकालीन शैली आदि भी वस्तुतः विशिष्ट धारा और विशिष्ट काल की शैली तत्कालीन समाज से सम्बध्द होती है । ... बारीकी से विश्लेषण किया जाय, तो पूँजीवादी देशों और समाजवादी देशों की शैलियों के अलग-अलग चेहरे एक सीमातक पहचाने जा सकते हैं ।''[१]

समाजशास्त्र का क्षेत्र मनोविज्ञान साहित्यशास्त्र आदि की अपेक्षा बहुत व्यापक है क्योंकि वह एक प्रकार से आधारशास्त्र माना जा सकता है । अर्थात् शैलीविज्ञान का संबंध एक अंग के रूप में है, जो संचार साधनों मूलतः संचार के भाषिक साधनों के साथ जुडा है ।

३.७ शैली विज्ञान तथा मानवविज्ञान :

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है मानव विज्ञान मानव की उत्पत्ति और विकास का विवेचन करता है । 'बनावट के अनुसार मानव जाति के कितने भेद है, उनका विस्तार कैसे हुआ, उनकी क्या विशेषताएँ है आदि बाते मानवविज्ञान में निरूपित होती हैं ।''[२] इस विषय अध्ययन में मनुष्य आदिम अवस्था से अब तक कैसे पहुँचा है ? इस विकास यात्रा में उसके रहन-सहन, भाषा, कला आदि का उसपर क्या प्रभाव पडा है, यह हम मानव विज्ञान के द्वारा ही जानते है । मनुष्य के विकास में उसकी भाषा का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है । और मनुष्य जीवन का समग्र चित्रण साहित्य में होता है । इसलिए मनुष्य, भाषा, साहित्य आदि का एक दूसरे पर प्रभाव है । इसलिए इन तीनों का एकत्रित अध्ययन करनेवाला शास्त्र शैलीविज्ञान कहलाता है ।

मनुष्य का विकास दोनों प्रकार से होता है - एक प्राकृतिक तो दुसरा सांस्कृतिक । जितने विकास के पहलु अर्थात प्रकार है उतनी शैलियाँ होती है । इस कारण मानव विज्ञान और शैलीविज्ञान का सम्बन्ध हैं ।

---

१. तिवारी, भोलानाथ : शैली विज्ञान, पृ.क्र. २९
२. शर्मा, डॉ. देवेंद्रनाथ : भाषा विज्ञान की भूमिका, पृ.क्र. १९३

३.८ शैली विज्ञान तथा इतिहास :

मनुष्य जीवन के प्रमुख अंगो में समाज, धर्म, राजनीति आदि क्रियाकलापों का अंतर्भाव होता है। उक्त तीनो तत्व मनुष्य के जीवन और भाषा को प्रभावित करतेह हैं। ऐतिहासिक ज्ञान का आधार भाषा से संभव है। साथ ही ऐतिहासिक शैलियों का परिचय भाषा के माध्यम से इतिहास की सहायता लेकर शैली विज्ञान कर देता है। जैसे गुप्त शैली, कुटिल शैली, राष्ट्रगुप्त शैली, गंधर्व शैली आदि। ध्वनि, शब्द, पद, वाक्य और अर्थ को समझने के लिए भी इतिहास शैली विज्ञान को सहायता पहुँचाता हैं। समाज में परिवर्तित परिस्थितियों के साथ-साथ भाषा में भी अनेक विध परिवर्तन घटित होते है। इतिहास की खंडित परम्पराओं को जोडने के लिए तत्कालीन साहित्य शैली मद्द करती है।

इस प्रकार कई ऐतिहासिक समस्याओं को सुलझाने के लिए इतिहास शैली विज्ञान को तो शैली विज्ञान इतिहास को मद्द करती है। अतः ये दोनों एक दूसरे पर आश्रित हैं।

३.९ शैली विज्ञान तथा भूगोल :

मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकता भाषा है। ''वह विशिष्ट भौगोलिक परिवेश का निवासी होने के कारण उसपर उस प्रदेश विशेष का पर्याप्त प्रभाव पाया जाता है।''[१] यदि वह मनुष्य साहित्यकार है तो उसके साहित्य में उस भौगोलिक परिवेश का दर्शन होता है। जैसे - शैलेश मटियानी के उपन्यासों में उनके प्रदेश की भाषा का प्रभाव दिखता है। जिसके माध्यम से भौगोलिक आधार पर भाषा की शैलियाँ रूढ होती है। जैसे भारतीय काव्यशास्त्र में वैदभी, पांचाली, गौडी नामक जो रीतियाँ (शैलियाँ) है वह भौगोलिक प्रभाव से ही उनका नामकरण रूढ (प्रचलित) हुआ है।

भारत वर्ष बहुभाषी होने के कारण तथा भौगोलिक दृष्टी से विभिन्नता होने के कारण पग् पग् पर भाषा के अलग-अलग रूप दिखायी देते है। जहाँ भाषा बदलती है, वहाँ साहित्यिक, व्यक्तिगत, सामाजिक शैली भी बदलती है।

इस प्रकार भूगोल का प्रभाव व्यक्तिभाषा, साहित्यभाषा पर होने के कारण भूगोल का शैली विज्ञान से काफी गहरा संबंध है। क्योंकि शैली विज्ञान साहित्य की भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन करता है।

---

१. सरोदे, डॉ. पितांबर, पाटील, डॉ. विश्वास : सरल भाषा विज्ञान, पृ.क्र. २५

३.१० अन्य शास्त्रों मे शैली विज्ञान का महत्व :

शैली विज्ञान में शैली का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता हैं । यह विज्ञान साहित्यशास्त्र तथा भाषा विज्ञान के पर्याप्त निकट हैं । भारतीय साहित्यशास्त्र के रीति, वक्रोक्ति, ध्वनि आदि सम्प्रदाय इसमें प्रमुखतः आते है और शेष रस, अलंकार, वक्रोक्ति और औचित्य भी विशेष भूमिका निभाते है । पाश्चात्य साहित्यशास्त्र के सिध्दान्तों के लक्षण भी इसमे दृष्टिगत् होते है । इस प्रकार शैली के आधुनिक विवेचन और विश्लेषण का मूलाधार भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्यशास्त्र है ।

शैली विज्ञान में प्रभाव की दृष्टि से ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य आदि पर विचार किया जाता है । इन आधारों पर इसके (१) ध्वनिय शैली विज्ञान, (२) शब्दीय शैली विज्ञान, (३) रूपीय शैली विज्ञान, (४) वाक्यीय शैली विज्ञान, (५) अर्थीय शैली विज्ञान आदि उपभेद हो सकते हैं । इसके अन्तर्गत इस बात पर विचार करते है कि, साहित्य रचना या बातचीत में प्रभाव आदि की दृष्टि से किस प्रकार की ध्वनियों, रूपों, शब्दों, वाक्यों या अर्थो आदि को छोडा जाए और किन्हें प्रयुक्त किया जाय । इस तरह इसमें चयन पध्दति एवं उसके आधारभूत सिध्दान्तों पर विचार किया जाता है । शैली विज्ञान के अन्तर्गत इसप्रकार का विचार साहित्यिक भाषा के सम्बन्ध में तो होता ही है, रोज की बोली जानेवाली भाषा में भी वक्ता के सामाजिक स्तर, व्यक्तित्व, भौगोलिक प्रभाव, मनोवैज्ञानिकता, दार्शनिकता के आधार पर भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से विचार किया जाता है ।

इस प्रकार शैली विज्ञान का स्थान ज्ञान के अन्यशास्त्रों में श्रेष्ठ माना जाता हैं । तथा शैली विज्ञान का साहित्यशास्त्र एवं भाषा विज्ञान से आज साहित्य समीक्षा की दृष्टि से विशेष महत्व है । शैली विज्ञान का ज्ञान के अन्य शास्त्रों में जो सही परिचय है वह उसकी सत्ता से ही ज्ञात होगा । अतः शैली विज्ञान की साहित्य एवं भाषा जगत में स्वतंत्र सत्ता है ।

३.११ शैली विज्ञान की स्वतंत्र सत्ता :

उपर्युक्त विवेचन के बाद शैली विज्ञान की वास्तविक स्थिति एवं स्वतंत्र सत्ता का निर्णय करना आसान होगा । जहाँ तक दर्शनशास्त्र, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान जैसे मौलिक शास्त्रों का सम्बन्ध है, वे तो शैली विज्ञान के उपघटक ही है, उनके अन्तरंग में शैली विज्ञान नहीं आता परंतु बाह्यरंग में आता हैं । तथा सुत्रों का उपयोग करता हैं, किन्तु इस प्रकार के प्रभाव ग्रहण से उसकी स्वतंत्र सत्ता बाधित नहीं होती । जैसा की ऊपर कहा गया है, साहित्यशास्त्र (काव्यशास्त्र), भाषाविज्ञान तथा

सौन्दर्यशास्त्र के साथ उसका घनिष्ट सम्बन्ध है और वह निश्चित ही उनके अन्तरंग में आता हैं । क्योंकि ''शैली विज्ञान को भाषिक सौन्दर्यशास्त्र कहा जाता है, परन्तु इसे सौन्दर्यशास्त्र कहा जाता है, किन्तु इससे सौन्दर्यशास्त्र के क्षेत्र का परिसीमन हो जाता है ।''[१] अर्थात् सौन्दर्यशास्त्र के अंतर्गत सौन्दर्य तत्व का विवेचन महत्वपूर्ण है । तथा शैलीविज्ञान का अत्याधिक संबंध भाषा विज्ञान तथा साहित्य विधा के साथ है और उसके स्वतंत्र अस्तित्व को खतरा भी उन्हीं दोनों से है क्योंकि दोनो ही उसे अपना घटक मानते हैं । ''भाषा वैज्ञानिक का दावा हैं कि शैलीविज्ञान भाषाविज्ञान की ही एक नवीन शाखा है क्योंकि एक तो इसके अध्ययन का विषय साहित्यिक भाषा–भाषा का ही एक विशेष रूप है और दुसरे इसके अध्ययन की प्रविधि भी मुख्यतः भाषाविज्ञान के सिध्दान्त सुत्रों और प्रविधि–प्रक्रिया से अनुशासित हैं ।''[२] उसी प्रकार साहित्य आचार्यों ने भी अपना दावा पेश किया है, उन्ही के अनुसार ''शैली विज्ञान जिस भाषिक विधान का अध्ययन करता है वह भाषा के अन्य रूपों से विशिष्ट होने के कारण साहित्य का अनिवार्य माध्यम है ।''[३] शैली विज्ञान परम्परागत् साहित्य सिध्दान्त एवं भाषा विज्ञान के तत्वों का आधार लेकर भले ही अध्ययन करता हो फिर भी उसका मुख्य अध्ययन विषय कला के सौन्दर्य के प्रति ही झुकता हैं । और पदार्थ निर्णय में विधि की अपेक्षा उद्देश्य की प्रधानता रहती है । अतःशैली का अध्ययन साहित्यिक का ही भाग है, भाषिक अध्ययन का नहीं, इसी तर्क से शैली विज्ञान साहित्य विधा का अंग है, भाषा विज्ञान का नहीं । अतः ये दोनों दावे तर्कसंगत एवं प्रमाणित है और उसी सीमा तक शैलीविज्ञान के स्वतंत्र अस्तित्व के विरूध्द पडते है । इसीलिए कई विद्वानों ने शैलीविज्ञान को संकर रूप माना है । परन्तु ये पुर्णतः गलत है क्योंकि शैली विज्ञान एक मौलिक, प्रमाणिक एवं व्यापक स्वतंत्र शास्त्र है और उसकी सीमा साहित्यशास्त्र, भाषाविज्ञान एवं सौन्दर्यशास्त्र से बडी (विस्तृत) है ।

अर्थात शैली विज्ञान की शक्ति और सीमा वही है जो नयी समीक्षा की है । नयी समीक्षा की अपेक्षा शैली विज्ञान को यह लाभ है कि उसे दृढ भाषा वैज्ञानिक आधार प्राप्त हैं । नये समीक्षक भी भाषिक आधार लेकर चलते है परन्तु भाषा विज्ञान का विधिवत् अध्ययन न होने के कारण उनकी प्रतिपक्तियाँ प्रायः प्रमाणित नहीं हो पायी ।

---

१. डॉ. नगेन्द्र, शैली विज्ञान : पृ. क्र. ४५
२. वही, पृ.क्र. ४५
३. वही, पृ.क्र. ४५

अतः शैली विज्ञान एक नये समीक्षा का सिध्दान्त बनकर साहित्य जगत् में सामने आ रहा है ।

इस प्रकार शैली विज्ञान की स्वतंत्र अभिजात सत्ता नये सिरे से साहित्य एवं भाषा जगत् में स्थापित हो गयी है ।

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः अन्य भी अनेक विषयों से शैली विज्ञान का संबंध है । अन्य विषयों से साहयता लेकर शैली विज्ञान अपने आपको परीपूर्ण बनाने की कोशीश करता है । वह अन्य विषयों का आधार ग्रहण करता है और यह आवश्यक भी है क्योंकी इसीसे परीपूर्णता आती है ।

भाषाविज्ञान से वैज्ञानिक आधार लेता है तो, साहित्यशास्त्र से साहित्यिक भाषा के माध्यम से जुडता है । मानसशास्त्र से लेखक के व्यक्तित्व के लिए जुडता है । सौन्दर्यशास्त्र से भाषिक सौन्दर्य को लेकर जुडता है । समाजशास्त्र के साथ समाज के भाषिक साधनों की अपेक्षा से जुडता है । इसी तरह वह मानवशास्त्र, इतिहास, भूगोल, दर्शनशास्त्र आदि से भी जुडा हुआ है । वह केवल इन विषयों से आधार ही ग्रहण नहीं करता तो इन विषयों को भी शैली विज्ञान से साहयता मिलती है । अर्थात यह परस्पर पूरक भी है । लेकिन यह संबंध कुछ पक्षों से ही या अंशतः ही है ।

लेकिन ऐसा होते हुए भी शैली विज्ञान की एक स्वतंत्र सत्ता है । जो उसे एक स्वतंत्र समीक्षा शास्त्र बनता है । लेकिन फिर भी नगेंन्द्र जी के अनुसार इसकी वास्तविक उपादयेता तो उसके साधन रूप में बने रहने में ही हैं । अर्थात् भाषाविज्ञान की नवीन प्रविधि-प्रक्रिया का विवेकपूर्वक उपयोग करते हुए शैलीविज्ञान साहित्य के मूर्तरूप शब्द का विश्लेषण करता है । तथा काव्यार्थ के कलात्मकता का मूल्यांकन करता है और इसी में ही शैलीविज्ञान का निजी महत्व हैं । वह भाषा का एक सौन्दर्यशास्त्र है । जो भाषा के सौंदर्य को पकडता है जो भाषाविज्ञान से संभव नही है ।